Achha Bolne Sunne Ke Fayde (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 469
Weekly Booklet : 469

अमीरे अहले सुन्नत की किताब "गुफ़्तगू के आदाब" से छठी क़िस्त

अच्छा बोलने सुनने के फ़ायदे

तिलावत सुनने का शौक़	02
जन्नत दरकार हो तो	03
ईमान की सलामती का ज़रीआ	06
सात हज़ार फ़ायदे हैं	13

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अच्छा बोलने सुनने के फ़ायदे[1]

दुआए अ़त्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 16 सफ़ह़ात का रिसाला “अच्छा बोलने सुनने के फ़ायदे” पढ़ या सुन ले उसे अच्छा बोलने और अच्छा सुनने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा, उस के ज़ाहिरो बात़िन को अच्छा कर और उस की मां बाप समेत बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू बक्र शिब्ली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه एक रोज़ बग़दादे मुअ़ल्ला के जय्यिद आ़लिम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन मुजाहिद رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के पास तशरीफ़ लाए, उन्हों ने फ़ौरन खड़े हो कर उन को गले लगा लिया और पेशानी चूम कर बड़ी ताज़ीम के साथ अपने पास बिठाया। ह़ाज़िरीन ने अ़र्ज़ किया : या सय्यिदी ! आप और अहले बग़दाद आज तक इन्हें दीवाना कहते रहे हैं मगर आज इन की इस क़दर ताज़ीम क्यूं ? जवाब दिया : मैं ने यूंही ऐसा नहीं किया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! आज रात मैं ने ख़्वाब में येह ईमान अफ़रोज़ मन्ज़र देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए तो सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खड़े हो कर उन को सीने से लगा लिया और पेशानी को बोसा दे कर अपने पहलू में बिठा लिया, मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शिब्ली पर इस क़दर शफ़्क़त की वजह ? अल्लाह

---

[1]...येह मज़्मून अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब “गुफ़्तगू के आदाब” सफ़ह़ा 81 ता 92 से लिया गया है।

पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (ग़ैब की ख़बर देते हुए इरशाद) फ़रमाया कि येह हर नमाज़ के बाद येह आयत पढ़ता है :

﴿لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِیْزٌ عَلَیْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِیْصٌ عَلَیْكُمْ بِالْمُؤْمِنِیْنَ رَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ۝۱۲۸﴾

(پ11،التوبۃ:128) [1] और उस के बाद मुझ पर दुरूद पढ़ता है। (القول البدیع،ص346)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

अफ़सोस ! तिलावत सुन कर बहुत से लोग उठ गए

हज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन अबू जअ़द رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه रिवायत करते हैं कि लोगों को पता चला कि सहाबिए नबी हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللهُ عَنْه (इराक़ के शहर) मदाइन की एक मस्जिद में हैं तो वोह उन के पास हाज़िर होने लगे यहां तक कि एक हज़ार के लग भग अफ़राद वहां जमा हो गए। आप رَضِیَ اللهُ عَنْه ने खड़े हो कर फ़रमाया : सब लोग बैठ जाएं, जब लोग बैठ गए तो आप رَضِیَ اللهُ عَنْه ने सूरए यूसुफ़ की तिलावत शुरूअ़ कर दी, आहिस्ता आहिस्ता लोग वहां से निकलने लगे, यहां तक कि 100 के क़रीब अफ़राद बाक़ी रह गए, आप ने जलाल में आ कर फ़रमाया : "तुम ने मनघड़त और फ़ुज़ूल बातें सुनना चाहीं, लेकिन मैं ने तुम्हें अल्लाह पाक का कलाम सुनाया तो उठ कर चले गए।"

(حلیۃ الاولیاء،1/261،قول نمبر:643, अल्लाह वालों की बातें, 1/377)

तिलावत सुनने का शौक़

ऐ आशिक़ाने रसूल ! तिलावते क़ुरआन करना और सुनना यक़ीनन येह बड़े सवाब का काम है मगर अफ़सोस ! अब इस से लोगों में काफ़ी दूरी पाई जा रही है, कोई क़ारी साहिब तिलावत करें तो सुनने को जी ही नहीं करता। सहाबए

1...तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक तुम्हारे पास तुम में से वोह अ़ज़ीम रसूल तशरीफ़ ले आए जिन पर तुम्हारा मशक़्क़त में पड़ना बहुत भारी गुज़रता है, वोह तुम्हारी भलाई के निहायत चाहने वाले, मुसलमानों पर बहुत मेहरबान, रह़मत फ़रमाने वाले हैं।

किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان के शौक़े तिलावत के बारे में "इह़याउल उ़लूम (उर्दू)" पहली जिल्द सफ़ह़ा 845 पर है : मरवी (यानी बयान किया गया) है कि सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان जब इकट्ठे होते तो किसी एक से कहते कि क़ुरआने करीम की कोई सूरत सुनाओ। (احیاء العلوم، 1/372)

एक आयत सुनने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं : जो शख़्स क़ुरआने पाक की कोई आयत सुनता है, क़ियामत के दिन वोह उस के लिए नूर होगी। (مصنّف عبد الرزاق، 3/229، قول نمبر:6032)

देखा आप ने ! क़ुरआने करीम की तिलावत सुनने का कितना अ़ज़ीमुश्शान अज्र है और तिलावत करने वाला जो इस का सबब है वोह भी अज्रो सवाब में इस का शरीक है बशर्ते कि रियाकारी और बनावट की निय्यत न हो।

तिलावत में 20 बरस मशक़्क़त उठाई

दिल लगे या न लगे इ़बादत व तिलावत जारी रखना चाहिए, اِنۡ شَآءَاللہ कभी न कभी दिल लग ही जाएगा। ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ ने फ़रमाया : (दिल न लगने के बावुजूद) मैं ने 20 बरस क़ुरआने पाक से (तिलावत करने की) मशक़्क़त उठाई और फिर 20 बरस इस की ह़लावत (यानी लज़्ज़त) पाई। (इह़याउल उ़लूम (उर्दू), 1/871)

हर रोज़ मैं क़ुरआन पढ़ूं काश ! ख़ुदाया   अल्लाह ! तिलावत में मेरे दिल को लगा दे

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

जन्नत दरकार हो तो ख़ैर के सिवा कुछ ज़बान से मत निकालो

ज़बान पर जब ख़ैर ही ख़ैर जारी होगा, ज़िक्रो दुरूद का विर्द होगा। फ़ुज़ूल बातों की आ़दत न होगी तो झूट, ग़ीबत, चुग़ली व ऐ़ब जोई वग़ैरा गुनाहों से भी

जान छूटी रहेगी और यूं اِنْ شَآءَاللہ जन्नत में जाने के अस्बाब हो जाएंगे। चुनान्चे सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ लिखते हैं कि हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ख़िदमते बा बरकत में लोगों ने अ़र्ज़ किया : कोई ऐसा अ़मल बताइए कि जिस से जन्नत मिले। आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "कभी बोलो मत।" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : येह तो नहीं हो सकता। फ़रमाया : "अच्छी बात के सिवा ज़बान से कुछ मत निकालो।"

(इह़याउल उ़लूम (उर्दू), 336, 136/3،احیاء العلوم)

अक्सर मेरे होंटों पे रहे ज़िक्रे मदीना
अल्लाह ज़बां का हो अ़ता क़ुफ़्ले मदीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 93)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

गुनाहों से सच्ची तौबा कर ली

ऐ जन्नत के त़लबगारो ! इस वाक़िए से मालूम हुवा कि ज़बान को क़ाबू में रखना और ग़ैर ज़रूरी बातों से बचना भी जन्नत में ले जाने वाले काम हैं, ज़बान और दीगर आज़ाए बदन को गुनाहों से बचा कर जन्नत में ले जाने वाले आमाल बजा लाने का जज़्बा पाने के लिए दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल में रच बस जाइए, اِنْ شَآءَاللہ फ़ायदे में रहेंगे। आख़िरत की भलाइयां पाने का शौक़ बढ़ाने के लिए एक "मदनी बहार" आप के गोश गुज़ार की जाती है। चुनान्चे बहुत पहले की बात है कि एक ख़ातून ऐसे दफ़्तर में काम करती थी जहां मर्दो अ़ौरत सभी मुलाज़मत करते थे, बे पर्दगी, बद निगाही के साथ साथ ऐसी कई बुराइयां वहां आ़म थीं जिन्हें बद क़िस्मती से आज के मुआ़शरे में बुराई ही नहीं समझा जाता। उसी बुरे माह़ौल का नतीजा था कि येह फ़िल्मों, ड्रामों और गाने बाजों और नित

नए फ़ैशन और पार्कों में बे पर्दा घूमने की शौक़ीन थीं, वालिदैन की ना फ़रमानी बल्कि उन से बद कलामी और बड़ों से बदतमीज़ी करना उन का मामूल था।

एक दिन एक बुर्क़ा वाली बा पर्दा इस्लामी बहन उन के घर आईं, जब उन्हों ने उन के सामने अपना निक़ाब हटाया तो येह ह़ैरत ज़दा हो गईं कि येह तो वोही हैं जो मेरे साथ दफ़्तर में काम किया करती थीं और इन्ही की त़रह़ बे पर्दा और फ़ैशन ज़दा भी थीं। कुछ अ़र्सा क़ब्ल मुलाज़मत छोड़ चुकी थीं, अब वोह दावते इस्लामी की मुबल्लिग़ा थीं, मुख़्तसर सी मुद्दत में इतनी बड़ी तब्दीली देख कर येह मुतअस्सिर हुए बग़ैर न रह सकीं। इस्लामी बहन ने नर्म लहजे में उन्हें नेकी की दावत पेश की और दावते इस्लामी के इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की तरग़ीब दिलाई, उन्हों ने इज्तिमाअ़ में शरीक होने की निय्यत कर ली, उस इस्लामी बहन की ज़िन्दगी में आने वाली तब्दीली पहले ही उन के दिल पर दस्तक दे चुकी थी, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत और वहां होने वाले फ़िक्रे आख़िरत से मामूर बयान ने उन्हें ख़्वाबे ग़फ़्लत से झिंजोड़ कर जगा दिया, रही सही कसर रिक़्क़त अंगेज़ इज्तिमाई दुआ़ ने पूरी कर दी, येह अपने जज़्बात पर क़ाबू न रख सकीं और फूट फूट कर रोने लगीं, उन्हें अपने गुनाहों पर नदामत होने लगी, अल्लाह पाक की बारगाह में सच्चे दिल से तौबा कर ली। येह रब्बे करीम का शुक्र अदा करती हैं कि उस ने उन को गुनाहों की दलदल से निकलने के लिए दावते इस्लामी का सहारा अ़त़ा कर दिया।

सलामत रहे या ख़ुदा दीनी माह़ौल बचे बद नज़र से सदा दीनी माह़ौल
दुआ़ है तुझ से दिल ऐसा लगा दे न छूटे कभी भी ख़ुदा दीनी माह़ौल

(वसाइले बख़्शिश, स. 647)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ علٰى مُحَمَّد

ख़ामोशी ईमान की सलामती का ज़रीआ है

जिस की ज़बान क़ैंची की त़रह़ हर किसी की बात काटती चली जाती होगी वोह दूसरे की बात अच्छी त़रह़ समझने से मह़रूम रहेगा, बल्कि बातूनी शख़्स के लिए येह भी ख़त़रा रहता है कि बक बक करते हुए ज़बान से مَعَاذَاللہ कुफ़्रियात भी निकल जाएं। चुनान्चे ह़ज़रते इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ "इह़याउल उ़लूम" में लिखते हैं कि बाज़ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है : "ख़ामोश रहने वाले शख़्स में दो ख़ूबियां जमा हो जाती हैं : ﴾1﴿ उस का दीन सलामत रहता है और ﴾2﴿ दूसरे की बात अच्छी त़रह़ समझ लेता है।" (احیاء العلوم،3/137)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

जन्नती होने का राज़ (वाक़िआ़)

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे सब से आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह पाक की अ़त़ा से लोगों को देख कर पहचान लेते थे कि येह जन्नती है या जहन्नमी बल्कि आने वाले की पहले से ख़बर हो जाती कि वोह जन्नती है या दोज़ख़ी, चुनान्चे अल्लाह पाक के प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक मरतबा इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स सब से पहले इस दरवाज़े से दाख़िल होगा वोह जन्नती होगा।" इतने में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ दरवाज़े से दाख़िल हुए, लोगों ने उन को मुबारकबाद देते हुए पूछा कि आख़िर किस अ़मल के सबब आप को येह सआ़दत मिली ? फ़रमाया : मेरा अ़मल तो बहुत थोड़ा है और जिस की मैं अल्लाह पाक से उम्मीद रखता हूं वोह मेरे सीने की सलामती और बे मक़्सद बातों को छोड़ना है।

(الصمت،7/86،قول نمبر:111)

इस ह़दीसे पाक के अल्फ़ाज़ "سَلَامَةُ الصَّدْرِ" यानी "सीने की सलामती" से मुराद दिल का लग़्वियात (यानी फ़ुज़ूलियात) बुग़्ज़ो ह़सद वग़ैरा अमराज़े बात़िनिय्या (यानी गुनाहों की छुपी हुई बीमारियों) से पाक होना और दिल में ईमान का मज़बूत़ होना है।

रफ़्तार का गुफ़्तार का किरदार का दे दे हर उ़ज़्व का दे मुझ को ख़ुदा क़ुफ़्ले मदीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 95)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

हर सह़ाबिए नबी जन्नती जन्नती

سُبْحَانَ الله ! सह़ाबिए नबी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْه के मुक़द्दर की भी क्या बात है कि उन्हें ज़बाने नबी से जन्नती होने की बिशारत मिली, बेशक आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْه जन्नती हैं और सिर्फ़ आप ही नहीं हर सह़ाबिए नबी जन्नती है, चुनान्चे "फ़ैज़ाने नमाज़" सफ़ह़ा 329 ता 330 पर है : अल्लाह पाक पारह 27 सूरतुल ह़दीद की आयत नम्बर 10 में इरशाद फ़रमाता है :

لَا يَسْتَوِيْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقٰتَلَ ؕ اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَقٰتَلُوْا ؕ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝١٠

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : तुम में फ़त्ह़ से पहले ख़र्च करने वाले और जिहाद करने वाले बराबर नहीं हैं, वोह बाद में ख़र्च करने वालों और लड़ने वालों से मर्तबे में बड़े हैं और उन सब से अल्लाह ने सब से अच्छी चीज़ का वादा फ़रमा लिया है और अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है।

तमाम सह़ाबा जन्नती हैं

मुफ़स्सिरे क़ुरआन ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : उन (सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) के दर्जे अगर्चे

मुख़्तलिफ़ हैं मगर उन सब का जन्नती होना बिल्कुल यक़ीनी है क्यूंकि रब वादा फ़रमा चुका है, तमाम सहाबा आदिल व मुत्तक़ी हैं क्यूंकि सब से रब्बे करीम ने जन्नत का वादा फ़रमा लिया, जन्नत का वादा फ़ासिक़ (यानी गुनहगार) से नहीं होता। (नूरुल इरफ़ान, आयते मज़्कूरा के तहत) हर सहाबी, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم की सहाबिय्यत की निस्बत से हमारे लिए वाजिबुत्ताज़ीम है और किसी भी सहाबी की गुस्ताख़ी हराम और गुमराही है।

हर सहाबिए नबी जन्नती जन्नती
सब सहाबियात भी जन्नती जन्नती
चार याराने नबी जन्नती जन्नती
हज़रते सिद्दीक़ भी जन्नती जन्नती
हैं उमर फ़ारूक़ भी जन्नती जन्नती
उस्माने ग़नी जन्नती जन्नती
फ़ातिमा और अली जन्नती जन्नती
हैं हसन हुसैन भी जन्नती जन्नती
वालिदैने नबी जन्नती जन्नती
हर ज़ौजए नबी जन्नती जन्नती
और अबू सुफ़्यान भी जन्नती जन्नती
हैं मुआविया भी जन्नती जन्नती

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! "फ़ुज़ूल बातें" अगर्चे गुनाह नहीं ताहम इस में कोई भलाई भी नहीं। سُبْحٰنَ الله ! अभी आप ने एक रिवायत सुनी जिस में सहाबिए नबी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को ज़बाने रिसालत से दुनिया ही में जन्नत की बिशारत इनायत हो गई ! आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ में एक ख़ूबी येह भी थी की कभी फ़ुज़ूल बातों में नहीं पड़ते थे, जिस काम से वासित़ा न होता उस के बारे में पूछते तक नहीं थे लेकिन अफ़सोस ! हमारा जिन मुआमलात से दूर का भी तअ़ल्लुक़ नहीं होता फिर भी उन में मुदाख़लत (INTERFERE) करते और उन के मुतअ़ल्लिक़ बिला ज़रूरत सुवालात करते रहते हैं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ज़ियादा खाना भी ज़ियादा बोलने का एक सबब है

महज़ लज़्ज़त के लिए ज़ियादा खाने पीने की क़ुरआनो ह़दीस में मज़म्मत आई है। पेट जब ज़ियादा भर जाता है तो मस्ती भी ज़ियादा सूझती है और ज़बान भी क़ैंची की त़रह़ चलने लगती है और जब भूक लगी होती है तो इन्सान सुस्त पड़ जाता है, ज़ियादा बोलने को जी नहीं चाहता। चुनान्चे ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब शारानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हमारे अस्लाफ़ यानी गुज़रे हुए बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم सख़्त भूक बरदाश्त करते और पेट न भरा करते ताकि उन की ख़ामोशी ज़ियादा हो और फ़ुज़ूल गोई कम हो जैसा कि बा अ़मल उ़लमाए दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم की आ़दते मुबारका थी, क्यूंकि जिस का पेट ख़ूब भरा होता है उस का बे फ़ायदा बोलना भी बढ़ जाता है। (تنبیہ المغترین، ص189)

बग़ैर भूक के खाने वाला बातूनी होता है

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद राहिबी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : पेट में फ़ुज़ूल खाना भरने वाले की ज़बान से बातें भी फ़ुज़ूल निकलेंगी। (تنبیہ المغترین، ص189)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

तल्वार का ज़ख़्म भर जाता है मगर ज़बान का ज़ख़्म नहीं भरता

तीरो तल्वार से सिर्फ़ जिस्म घायल (यानी ज़ख़्मी) होता है, मगर ज़बान की वजह से दिल घायल हो जाता है। ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि इन्सान को तीर मारना उस को ज़बान से बुरा भला कहने से कम है, क्यूंकि ज़बान के निशाने कभी ख़त़ा नहीं होते। (تنبیہ المغترین، ص189)

ज़बान को क़ैद कर के रखो

जो शख़्स अपनी ज़बान को क़ैदी बनाने में कामयाब हो गया वोह यक़ीनन बे शुमार फ़ित्नों से मह़फ़ूज़ हो गया, चुनान्चे सह़ाबिए रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना

अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं : "क़सम है उस ज़ाते पाक की जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, ऐसी कोई चीज़ नहीं जिसे ज़बान से ज़ियादा क़ैद में रखना ज़रूरी हो।" (इह़याउल उ़लूम (उर्दू), 3/338, احیاء العلوم، 3/137)

जो बात दो होंटों में न समाई अब वोह कहीं न समाएगी

बोलने से पहले अच्छी त़रह़ ग़ौर कर लेना चाहिए कि कहीं बाद में शर्मिन्दगी न उठानी पड़े। (करोड़ों शाफ़ेइयों के पेशवा) ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि बात तीर की त़रह़ है, अगर तेरे पास से निकल जाए तो वोह दूसरे की हो जाएगी और अब उस का मालिक तू नहीं होगा।

(تنبیہ المغترین، ص189)

बशर राज़े दिली कह कर ज़लीलो ख़्वार होता है
निकल जाती है जब ख़ुश्बू तो गुल बेकार होता है

مَاشَاءَاللّٰہ ! बाज़ साह़िबान बहुत ही समझदार और पेट के ख़ूब मज़बूत होते हैं और कुछ भी हो जाए, राज़ नहीं खोलते और घर की बात बाहर नहीं करते। ऐसे ही एक अ़क़्लमन्द का वाक़िआ़ वाक़ेई लाइक़े तक़्लीद है, चुनान्चे

घर की बात बाहर करने वाला कमज़ात होता है

एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक साह़िबे राज़ (यानी पेट के मज़बूत आदमी) का निकाह़ हुवा मगर मियां बीवी में ज़ेहनी हम आहंगी (यानी अन्डर स्टैन्डिंग) की कमी थी। किसी त़रह़ उस के दोस्त को इस बात का पता चल गया, उस ने पूछा : तुम्हारे घर का क्या मस्अला है ? उस साह़िबे राज़ ने जवाब दिया : मैं इतना कमज़ात नहीं कि घर की बात किसी को बता दूं। बात आई गई हो गई। बिल आख़िर घर न चल सका और त़लाक़ देनी पड़ गई। जब उस के दोस्त को पता चला तो बोला : वोह तो अब तुम्हारी बीवी नहीं रही, बता दो क्या मुआ़मला

था ? उस समझदार शख़्स ने जवाब दिया : अब तो वोह मेरे लिए ग़ैर ओ़रत हो चुकी है और किसी ग़ैर ओ़रत के मुतअ़ल्लिक़ मैं कैसे बात करूं !

(ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 363)

अल्लाह हम को फ़ज़्ल से अ़क़्ले सलीम दे शर्मो ह़या तुफ़ैले रसूले करीम दे

बाज़ औक़ात तो ऐसी बात मुंह से निकल जाती है कि....

ह़ज़रते बिलाल बिन ह़ारिस رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि एक लफ़्ज़ आदमी अल्लाह पाक की ख़ुशी का कहता है और येह नहीं जानता कि इस से कुछ बड़ी रिज़ामन्दी ह़ासिल होगी मगर अल्लाह पाक उसी के बाइ़स क़ियामत तक की रिज़ामन्दी (यानी ख़ुशी) लिख लेता है और कभी एक कलिमा (यानी लफ़्ज़) नाराज़ी का कहता है और येह नहीं मालूम होता कि इस से नाराज़ी ज़ियादा होगी मगर अल्लाह पाक उस से अपनी नाराज़ी क़ियामत तक की लिखता है। (ترمذی،4/143،حدیث:2326)

वोह बे फ़ायदा कम बोलेगा

जो कोई ख़ुश नसीब ज़ेवरे ख़ौफ़े ख़ुदा से आरास्ता हो कर मौत को कसरत से याद करता हो, थोड़ी आमदनी (INCOME) पर भी शुक्र गुज़ार हो, ज़ियादा मालो दौलत की हवस न हो और जिस को येह भी एह़सास हो कि "बोलना" भी कोई अ़मल है, जिस का ह़िसाब देना पड़ेगा। तो ऐसा शख़्स बेकार बातें कभी नहीं कर सकता। जैसा कि ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : जो कोई मौत को बहुत याद करता है, (वोह) दुनिया से थोड़ी चीज़ पर (भी) क़नाअ़त करता (यानी क़िस्मत पर राज़ी रहता) है और जो अपनी बात चीत को भी अ़मल तसव्वुर करता है वोह बे फ़ायदा कम बोलता है।

(इह़याउल उ़लूम (उर्दू), 3/338, احیاء العلوم،3/137)

ज़बान का फिसलना पांव के फिसलने से ज़ियादा ख़तरनाक है

हर वक़्त बातें करते रहने से येह भी अन्देशा (यानी डर) रहता है कि मक़्बूलियत की घड़ी हो और कोई बात ना पसन्दीदा निकल जाए और वैसा ही हो जाए। एक अ़रबी शाइ़र के अश्आ़र का तर्जमा है : "आदमी अपनी ज़बान की लग़्ज़िश (यानी फिस्लन) से हलाक हो जाता है, जब कि पांव के फ़िसलने से उसे मौत नहीं आ जाती, जो चीज़ ना पसन्द हो उस का ज़बान से तज़्किरा भी मत करो, बसा औक़ात जो कुछ ज़बान से निकलता जाता है, वैसा ही हो जाता है।"

(تنبیہ الغافلین، ص116)

न जाने कौन सी घड़ी क़बूलिय्यत की हो

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! इधर उधर की बातें करने से बचने ही में भलाई है, जब भी फ़ारिग़ हों फ़ौरन ज़बान पर ज़िक्रो दुरूद की तरकीब कर ली जाए, न जाने कब क़बूलिय्यत की घड़ी आ जाए और हमारा बेड़ा पार हो जाए। ह़ज़रते लुक़्मान ह़कीम رَحْمَةُاللهِعَلَيْه ने अपने बेटे से फ़रमाया : ऐ मेरे बेटे اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ पढ़ते रहा करो, क्यूंकि अल्लाह पाक की त़रफ़ से कुछ औक़ात ऐसे हैं जिस में दुआ़ मांगने वाले की दुआ़ क़बूल कर ली जाती है।

(کتاب حسن الظن باللہ مع موسوعۃ ابن ابی الدنیا،1/110، قول نمبر:118)

फ़ुज़ूल बोलने वाले की क़ियामत में पांच जगह परेशानी

मन्क़ूल (यानी कहा गया) है कि हर हंसी मिज़ाह़ (यानी मज़ाक़ मस्ख़री) या लग़्व (यानी फ़ुज़ूल) बात पर बन्दे को (मैदाने क़ियामत में) पांच मक़ामात पर झिड़कने और वज़ाह़त त़लब करने की ख़ात़िर रोका जाएगा :

﴾1﴿ तू ने बात क्यूं की थी ? क्या इस में तेरा कोई फ़ायदा था ?

﴾2﴿ तू ने जो बात की थी क्या उस से तुझे कोई नफ़ा ह़ासिल हुवा ?

﴾3﴿ अगर तू वोह बात न करता तो क्या तुझे कोई नुक़्सान उठाना पड़ता ?

﴾4﴿ तू ख़ामोश क्यूं न रहा ताकि अन्जाम से मह़फ़ूज़ रहता ?

﴾5﴿ तू ने उस की जगह سُبْحٰنَ الله, اَلْحَمْدُ لله कह कर अज्रो सवाब क्यूं ह़ासिल न किया ? (قوتُ القلوب، 1/468)

ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "ज़बान से सर की ह़िफ़ाज़त होती है।" (تنبیہ المغترین، ص190) ज़बान से जिस को बुरा भला कहा गया, हो सकता है वोह ग़ुस्से में मार धाड़ पर उतर आए और सर वग़ैरा फाड़ दे।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّد

ख़ामोशी में सात हज़ार फ़ायदे हैं

किसी अ़क़्लमन्द का कहना है कि ख़ामोशी में सात हज़ार फ़ायदे हैं,जो सात जुम्लों (यानी सेन्टेन्स। SENTENCES) में जमा हैं और हर जुम्ले में एक हज़ार फ़ायदे हैं :

﴾1﴿ ख़ामोशी बग़ैर मेह़नत के (यानी बाज़ शराइत़ के साथ) इ़बादत है ﴾2﴿ ख़ामोशी बिला ज़ेवर के ज़ीनत है ﴾3﴿ ख़ामोशी बग़ैर सल्त़नत के हैबत है ﴾4﴿ ख़ामोशी बिग़ैर दीवारों के क़ल्अ़ा है ﴾5﴿ ख़ामोशी में किसी एक के पास माज़िरत (यानी SORRY) नहीं करना पड़ती ﴾6﴿ ख़ामोशी में किरामन कातिबीन (यानी आमाल लिखने वाले फ़रिश्तों) की राह़त है ﴾7﴿ ख़ामोशी इन्सान के ऐ़बों के लिए पर्दा है। (تنبیہ الغافلین، ص117)

जवानी दीवानी है इस के शर से बचो !

जवानी में उ़मूमन सेह़त अच्छी रहती है, उमंगें और आरज़ूएं कसीर (यानी ज़ियादा) होती हैं और वाक़ेई़ जवानी में सख़्त आज़्माइश होती है। चुनान्चे ह़ज़रते

ह़सन बसरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہِ से रिवायत है, मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ ने एक नौजवान से फ़रमाया : "ऐ नौजवान ! अगर तू तीन चीज़ों के शर से बच जाए तो जवानी के शर से मह़फ़ूज़ हो जाएगा : ﴾1﴿ ज़बान के शर (यानी बुराई) से ﴾2﴿ शर्मगाह के शर से ﴾3﴿ तीसरे पेट के शर से ।"

(تنبیہ الغافلین، ص117)

ढलने वाली है जवानी जिस पे तुझ को नाज़ है   तू बजा ले चाहे जितना चार दिन का साज़ है

न बोलने में नौ गुन

वाक़ेई़ कम बोलने में आ़फ़ियत व सलामती है । ह़ज़रते वुहैब बिन वर्द رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہِ फ़रमाते हैं : "आ़फ़ियत के दस ह़िस्से हैं, इस में से 9 ह़िस्से सिर्फ़ ख़ामोशी में हैं और एक ह़िस्सा लोगों से दूर भागने में ।" (تنبیہ الغافلین، ص190)

ज़बान की ह़िफ़ाज़त सोने चांदी की त़रह़ करो

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا ने फ़रमाया : "बे मक़्सद काम को तर्क कर दो, फ़ुज़ूल बातों से बचो और अपनी ज़बान की इस त़रह़ ह़िफ़ाज़त करो जिस त़रह़ सोने चांदी की ह़िफ़ाज़त करते हो ।"

(حلیۃ الاولیاء، 1/359، رقم: 359, अल्लाह वालों की बातें, 1/508)

ख़ामोशी "सोना" है

अल्लाह पाक के प्यारे नबी ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَیۡہِ السَّلَام फ़रमाते हैं कि अगर बात चीत करना "चांदी" (यानी SILVER) हो तो चुप रहना "सोना" (यानी GOLD) है । (احیاء العلوم، 3/136)

साह़िबे ह़िक्मत कौन ?

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब तुम दुनिया से बे रग़बत शख़्स को देखो और उसे कम बोलने वाला पाओ तो उस के

पास बैठो क्यूंकि उसे ह़िक्मत दी गई है।" (ابن ماجہ،4/422،حدیث:4101) "मिरआत" में इस ह़दीसे पाक के तह़त है : "ह़िक्मत" से मुराद इ़ल्म बा अ़मल है, बाज़ (उ़लमा) ने फ़रमाया : शरीअ़तो त़रीक़त का इज्तिमाअ़ यानी दोनों साथ साथ होना "ह़िक्मत" है। (मिरआतुल मनाजीह़, 7/57)

कम कलाम ज़ियादा काम

जो नेक आदमी हो उसे ज़िक्रो दुरूद और "नेकी की दावत के काम" से फ़ुर्सत ही कब मिलती है कि फ़ुज़ूल बकवास में पड़े और मुनाफ़िक़ तो होता ही फ़ाल्तू है इस लिए "बक बक" न किया करे तो और करे भी किया ! जैसा कि इमाम औज़ाई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का येह मक़ूला मश्हूर है कि "मुसलमान कलाम (यानी गुफ़्तगू) कम और काम ज़ियादा करता है मगर मुनाफ़िक़ काम कम और कलाम (यानी फ़ाल्तू बातें) ज़ियादा करता है।" (تنبیہ الغافلین، ص115)

चालीस साल की रातें फ़ुज़ूल बातों से परहेज़ किया

अल्लाह पाक के ऐसे ऐसे नेक बन्दे और सब से आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीवाने होते हैं जिन को ज़िक्रो दुरूद से फ़ुर्सत ही नहीं मिलती कि फ़ुज़ूल बातों की नौबत आए। चुनान्चे ह़ज़रते मन्सूर बिन मोतमिर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने 40 साल तक बाद नमाज़े इ़शा किसी के साथ बातों में ह़िस्सा नहीं लिया।

(इह़याउल उ़लूम (उर्दू), 3/339 – احیاء العلوم،3/137)

अल्लाहु अकबर ! प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह वाले (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم) चालीस चालीस साल तक अपनी ज़बान को क़ाबू में रखने में कामयाब हो जाएं और हमारा ह़ाल येह है कि चालीस मिनट भी अपनी ज़बान न संभाल पाएं !

बेकार गुफ़्तगू से ख़ुदाया बचा मुझे ज़िक्रो दुरूदे पाक का शैदा बना मुझे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
तिलावत सुनने का शौक़	02	बग़ैर भूक के खाने वाला बातूनी	08
एक आयत सुनने की फ़ज़ीलत	02	ज़बान को क़ैद कर के रखो	09
तिलावत में 20 बरस मशक़्क़त उठाई	02	घर की बात बाहर करने वाला कमज़ात	10
गुनाहों से सच्ची तौबा कर ली	03	वोह बे फ़ायदा कम बोलेगा	11
ख़ामोशी ईमान की सलामती का ज़रीआ़ है	05	न जाने कौन सी घड़ी क़बूलिय्यत की हो	11
जन्नती होने का राज़ (वाक़िआ़)	05	ख़ामोशी में सात हज़ार फ़ायदे हैं	13
हर सह़ाबिए नबी जन्नती जन्नती	06	जवानी दीवानी है इस के शर से बचो !	13
तमाम सह़ाबा जन्नती हैं	07	न बोलने में नौ गुन	13
ज़ियादा खाना भी ज़ियादा बोलने का एक सबब है	08	ख़ामोशी "सोना" है	14

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आरास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पैम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मामूल बनाइये, अख़बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पैम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दावत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

अगले हफ़्ते का रिसाला

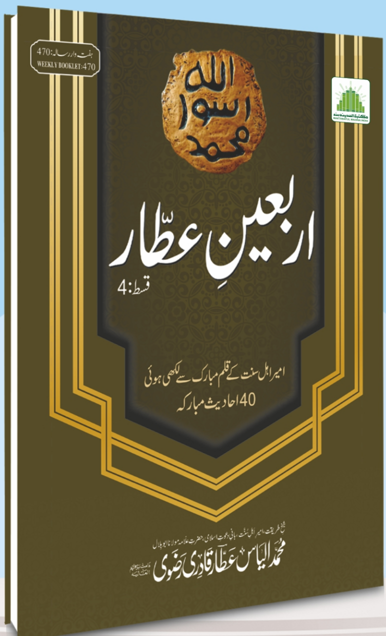

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 ✆ +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 ✆ +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 ✆ +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 ✆ +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in ✉ feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) ✆ +91-9978626025